

Inhaltsverzeichnis

| | | |
|------|---|-----|
| I. | Einleitung | 9 |
| II. | Das Böse | 19 |
| | 1. Die Todsünden | 19 |
| | 1.1 Die Versuchung im vermeintlichen Paradies | 19 |
| | 1.2 Hoffart und Völlerei | 21 |
| | 1.3 Wollust, Neid und Zorn | 34 |
| | 2. Dämonische Pläne | 39 |
| | 3. Sieben Sinne – sieben Sünden | 54 |
| | 4. Die Buße des Verblendeten | 59 |
| | 5. Die Klugheit des Fleisches | 61 |
| | 6. Die neue Kleidung | 75 |
| III. | Das Göttliche | 83 |
| | 1. Die Demut | 83 |
| | 1.1 Der Aufstieg | 83 |
| | 1.2 Ein „Einsidlerisches Leben“ | 101 |
| | 2. Ein falscher Gott: Das Geld des Zimmermanns | 104 |
| | 3. Der Monachus | 134 |
| IV. | Der Garten | 143 |
| | 1. Exkurs: Sensus spiritualis | 143 |
| | 1.1 Die zwei Bücher Gottes | 143 |
| | 1.2 Der mehrfache Schriftsinn in der „weltlichen“ Literatur | 147 |
| | 2. Naturbetrachtungen | 151 |
| | 3. Die Zucht des Seelengartens | 164 |
| | 4. Die Erinnerungen eines Lebens | 171 |
| V. | Die „Relation“ | 179 |
| | 1. Ein Narr in den Augen der Welt | 179 |
| | 2. Dunkle „Oracula“ | 183 |
| | 3. Die Zuflucht | 195 |
| | 3.1 Finsternis | 195 |
| | 3.2 Der Weg aus der Höhle | 212 |

| | |
|---|-----|
| 4. Pflaumenkerne | 218 |
| 5. Eintracht und Gottesfurcht | 227 |
| 5.1 Die Veränderbarkeit der Historien | 227 |
| 5.2 Die Dinge gelangen in die Welt | 230 |
| 6. Die „Strick der Welt“ | 231 |
| 7. Die Kunstkammer-Welt | 250 |
| | |
| VI. Die Rückkehr | 259 |
| 1. Ein anderer Antonius | 259 |
| 2. Coniunctio Saturni & Martis | 263 |
| 3. Die Therapie des simplicianischen Antoniters | 280 |
| 4. Die Rückkehr des Eremiten | 285 |
| | |
| VII. Schlussbetrachtungen | 289 |
| 1. Vita Simplicii? | 289 |
| 2. Zusammenfassung | 303 |
| | |
| VIII. Literaturverzeichnis | 309 |
| 1. Abkürzungen | 309 |
| 2. Literatur | 310 |
| 2.1 Quellen | 310 |
| 2.2 Sekundärliteratur | 317 |
| | |
| IX. Abbildungsverzeichnis | 333 |